क्रमबद्धपर्याय विषयक विद्वत्संगोष्ठी के प्रमुख बिन्दु

श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21-23 अक्टूबर तक अ. भा.विद्वत्परिषद एवं श्री टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था - **क्रमबद्धपर्याय**।

जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है क्रमबद्धपर्याय अर्थात् यह जगत पूर्ण रूप से सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित है। कोई इस जगत का कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है।

इस संगोष्ठी में कई बिन्दु उभर कर आए, जिनमें से प्रमुख निम्न हैं-

1. इस जगत में प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र रूप से परिणमित होता है। कोई इसका कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है। षट् द्रव्यमयी इस जगत की व्यवस्था स्वसंचालित है।

2. इस जगत के प्रत्येक द्रव्य का जिस क्षेत्र में, जिस काल में, जिस भावरूप जो परिणमन होना होता है, वही होता है। द्रव्य का यह परिणमन अनादिकाल से सुनिश्चित है। किसी के परिणमन कराने से द्रव्य परिणमित नहीं होता।

3. इस जगत का जैसा परिणमन अनादि काल से सुनिश्चित है, वैसा केवली भगवान जानते हैं। केवली भगवान के जानने से जगत का परिणमन सुनिश्चित नहीं होता; अपितु सुनिश्चित परिणमन को वे जानते हैं। केवली भगवान भी द्रव्यों के अनादि काल से निश्चित परिणमन को परिवर्तित नहीं कर सकते।

4. संसार का प्रत्येक जीव पर में फेरफार की भावना के कारण दु:खी है, पर पदार्थों में फेरफार कर सुखी होना चाहता है; परन्तु इस सिद्धांत से सिद्ध होता है कि प्रत्येक द्रव्य का परिणमन अनादि काल से सुनिश्चित है; अत: परद्रव्य में फेरफार करने का प्रयत्न निष्फल है।

5. इस सिद्धांत को जानने से पुरुषार्थ की हीनता नहीं होती; अपितु पर कर्तृत्व का अनंतभार हट जाने से दृष्टि स्वसन्मुख होकर अनंत ज्ञान व अनंत सुख उत्पन्न होता है।

6. किसी जीव की मृत्यु बाल्यावस्था में हो जाये तो यह अकाल मृत्यु नहीं; अपितु स्वकाल में हुई मृत्यु है; क्योंकि उस जीव का ऐसा परिणमन अनादि काल से निश्चित था।

7. इस सिद्धांत को समझने से ही प्रत्येक जीव अपने जीवन में सुख-शान्ति को प्राप्त कर सकता है; क्योंकि इसे समझने से पर में अपनत्व, ममत्व, कर्तृत्व व भोक्तृत्व बुद्धि हट जाती है, सुख बुद्धि हट जाती है,जिससे दृष्टि स्व सन्मुख होती है और जीव अनंत सुख को प्राप्त करता है।

8. इस सिद्धांत के कारण जीव स्वच्छंद हो जाये एवं विषय-भोगों में रम जाये तो यह उसी की भूल होगी। यह सिद्धांत तो पर-पदार्थों व विषय-भोगों से दृष्टि हटाकर स्वद्रव्य में दृष्टि करना सिखाता है, स्वाधीन होना सिखाता है।

9. इस सिद्धांत का नाम क्रमबद्धपर्याय, क्रमनियमित, सुव्यवस्थित व्यवस्था, निश्चित व्यवस्था, निश्चित परिणमन आदि अनेक हो सकते हैं अर्थात् जिस शब्द से इस सिद्धांत के भाव का ज्ञान हो, वही नाम इसे दिया जा सकता है।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 353 अंक : 5

या नित चितवो...

या नित चितवो उठि कै भोर।
मैं हूँ कौन, कहाँ तैं आयो, कौन हमारी ठौर।।टेक।।
दीसत कौन, कौन यह चितवत, कौन करत है शोर।
ईश्वर कौन, कौन है सेवक, कौन करत झकझोर।।
या नित चितवो...।।1।।
उपजत कौन, मरै को भाई, कौन डरे लखि घोर।
गया नहीं, आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर।।
या नित चितवो...।।2।।
और और मैं, और रूप ह्वै, परिनति करि लइ और।
स्वांग धरैं डोलौ याही तैं, तेरी 'बुधजन' भोर।।
या नित चितवो...।।3।।

- कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

मोक्ष तत्त्व

सकल कर्मतैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इहि विधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी।।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो।।१०।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

स्थिर सुखमय अर्थात् ध्रुव शाश्वत सुख से भरपूर और सकलकर्म से रहित जीव की अवस्था मोक्ष है। वही शिवपद है। शिव अर्थात् कल्याण, सुख। इसप्रकार जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष - इन सात तत्त्वों की श्रद्धा सम्यग्दृष्टि के होती है, इसे व्यवहार सम्यक्त्व कहते हैं और सात तत्त्वों में से अभूतार्थ भावों को छोड़कर जीव के एक शुद्ध स्वभाव की श्रद्धा करना निश्चय सम्यग्दर्शन है - ऐसे सम्यग्दर्शन को भव्यजीव धारण करते हैं।

वीतराग-सर्वज्ञ जिनेन्द्रदेव, शुद्धोपयोग से स्वरूप को साधने वाले निष्परिग्रही गुरु और सारभूत दयामय धर्म - ऐसे देव-गुरु-धर्म को ही सम्यग्दर्शन का निमित्तकारण कहा गया है। इनसे विपरीत को सम्यग्दृष्टि कभी नहीं मानता।

ऐसे सात तत्त्वों को तथा सच्चे देव-गुरु-धर्म को पहचानकर हे जीवों ! तुम निःशंकितादि अष्ट अंग सहित निश्चय सम्यग्दर्शन को धारण करो। इन निःशंकितादि आठ गुणों का कथन छंद १२ तथा १३ में करेंगे।

जीव त्रिकाल है और मोक्ष उसकी एक पूर्ण शुद्ध पर्याय है। जो टिकता है, वह गुण है; परन्तु जो पलट जाये, वह पर्याय कहलाती है। द्रव्य अनंत गुण-पर्यायसहित होता है। द्रव्य-गुण सदैव होते हैं; परन्तु मोक्षपर्याय नई होती है। सम्यग्दृष्टि के अभिप्राय में इन सबका स्वीकार आ जाता है।

अरहंत व सिद्ध परमात्मा देव हैं; आचार्य-उपाध्याय-साधु निर्ग्रन्थ गुरु हैं और

दयामय सारभूत धर्म है। यहाँ व्यवहार सम्यक्त्व का वर्णन है; अतः दयामय धर्म की बात की है। सारभूत दया अर्थात् सच्ची दया जैनधर्म में ही होती है, अन्य धर्मों में नहीं होती; क्योंकि आलू आदि में अनंत जीव हैं, अण्डे आदि में पंचेन्द्रिय जीव हैं - जो ऐसे जीव का अस्तित्व ही न जाने, उसको सच्ची दया कहाँ से हो सकती है? जो दया की बात तो करे; परन्तु कंदमूल आदि का भक्षण करने का कथन करे, रात्रि में भी खाने को कहे, उसके मत में जीवदया कहाँ रही ? अतः जीवदया का सच्चा स्वरूप जैनधर्म में ही है। तदुपरान्त निश्चय से जितनी राग की उत्पत्ति है, उतनी जीव के चैतन्यभाव की हिंसा है और राग न होना अहिंसा है। हिंसा-अहिंसा का ऐसा सूक्ष्म स्वरूप भगवान अरहंतदेव के शासन के बिना अन्यत्र कहीं भी नहीं है। इसप्रकार सम्यग्दृष्टि देव-गुरु-धर्म का स्वरूप पहचानते हैं और कुदेव-कुगुरु-कुधर्म को नहीं मानते।

ऐसे वीतरागी देव-गुरु-धर्म ही सम्यक्त्व में निमित्त होते हैं। जैनगुरु अर्थात् जैन साधु सदा निर्ग्रन्थ ही होते हैं; उन्हें बाह्य में वस्त्रादि परिग्रह की बुद्धि नहीं होती और अंतर में मिथ्यात्वादि भाव नहीं होते। जो इससे विपरीत स्वरूप माने, उसे तो व्यवहार सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्दर्शन के सच्चे निमित्त का भी ज्ञान नहीं है।

आत्मा में अतीन्द्रिय ज्ञान-आनन्द भरा है, देह तो जड़-धूलि है और रागादिक तो दुःख हैं ह्न ऐसी भिन्नता के भान से सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रगट करके शुद्धता प्रगट करना ही मोक्षमार्ग है और पूर्ण शुद्धता-पूर्ण ज्ञान-पूर्ण आनन्द का प्रगट होना मोक्ष है। मोक्ष ही आत्मा का परम हित है और उसका उपाय वीतराग-विज्ञान है, यही सच्ची विद्या है। सच्ची विद्या मोक्ष को देने वाली है - 'सा विद्या या विमुक्तये' - ऐसी मोक्ष की विद्या पूर्व में अनंतकाल से कभी जीव ने नहीं पढ़ी। बाहर की अनेक विद्याओं को पढ़ा और फिर भूला; परन्तु चैतन्यविद्या कभी नहीं पढ़ी। संसार की विद्या से भिन्न यह मोक्ष की विद्या है। यह वीतरागी विद्या जीव-अजीव के भिन्न-भिन्न स्वरूप को दिखाने वाली है, यही सच्चा विज्ञान है, इसके बिना अन्य सब अज्ञान है।

संसार के लोग देह को ही आत्मा समझकर जितनी भी विद्या पढ़ते हैं, वह सब कुज्ञान है, उसमें आत्मा का हित नहीं है। यह देह तो जड़ है, आत्मा नहीं। आत्मा

नित्य रहता है और शरीर तो भिन्न होकर राख हो जाता है। यदि वह आत्मा का होता तो आत्मा से कभी अलग नहीं होता। ज्ञान आत्मा से कभी भिन्न नहीं होता; अत: वह आत्मा का है। शरीर अलग होता है; अत: वह आत्मा से सदैव भिन्न ही है एवं कर्म भी शरीर की ही जाति के हैं, वे आत्मा की जाति के नहीं हैं, आत्मा से भिन्न हैं।

अहो, जिनेन्द्र भगवान के दर्शाये हुए वीतराग-विज्ञान से ही जड़-चेतन का ऐसा पृथक्करण होता है।

जड़ से भिन्न आत्मा को जानने के बाद, अंदर में होने वाले पुण्य-पाप के भावों से भी आत्मा को भिन्न जानना। पुण्य-पाप एवं राग-द्वेष विकृति है, दु:ख है, वह सच्चा आत्मा नहीं है। सच्चा आत्मा चेतनारूप व आनन्दरूप है। ऐसे आत्मा की पहचान से प्रगट होने वाली अंशरूप शुद्धता संवर-निर्जरारूप मोक्षमार्ग है और पूर्ण शुद्धता का प्रगट होना मोक्ष है। अतीन्द्रिय पूर्णसुख के अनुभवरूप मोक्षदशा आदरणीय है, वही साध्य है। मुमुक्षु जीव को ऐसे मोक्षपद के बिना दूसरा कोई साध्य नहीं है। उसे मोक्ष के अतिरिक्त अन्य किसी संयोग में या राग में चैन नहीं पड़ता, उसमें किंचित् सुख नहीं लगता।

- जीव का स्वभाव अजीव से भिन्न है और वह स्वयं सुखस्वरूप है।
- बाह्यसंयोग जीव को सुखरूप नहीं एवं दु:खरूप भी नहीं है।
- रागादि आस्रव दु:खरूप ही हैं, उनमें जरा भी सुख नहीं है।
- आत्मा के सम्यग्दर्शनादि सुखरूप हैं, उनमें दु:ख नहीं है।
- आस्रव दु:ख के कारण हैं; अत: इनको छोड़ो।
- संवर-निर्जरा सुख के कारण हैं; अत: इनको भजो।

अरे ! अपने सुख-दु:ख के कारण का भी अज्ञानी जीव को पता नहीं है। सच्चिदानंदस्वरूप आत्मा की पहचान करके (श्रद्धा-ज्ञान करके), उनसे विपरीत पुण्य-पाप-आस्रव-बंधरूप अशुद्ध भावों को दु:ख के कारण जानकर छोड़ देना चाहिए और शुद्ध आत्मा के सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप संवर को सुखरूप समझकर अंगीकार करना चाहिए। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन -

उत्तम सुख की प्राप्ति का उपाय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 44वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णिग्गंथो णीरागो णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मुक्को।
णिक्कामो णिक्कोहो णिम्माणो णिम्मदो अप्पा।।४४।।

(हरिगीत)

निर्ग्रन्थ है नीराग है नि:शल्य है निर्दोष है।
निर्मान-मद यह आतमा निष्काम है निष्क्रोध है।।४४।।

आत्मा निर्ग्रन्थ, निराग, नि:शल्य, सर्वदोषविमुक्त, निष्काम, नि:क्रोध, निर्मान और निर्मद है।

इस गाथा में शुद्धजीव का स्वरूप कहा है।

(१) शुद्धजीव बाह्य-अभ्यन्तर चौबीस परिग्रहों से रहित है, इसलिये निर्ग्रन्थ है।

''शुद्धजीवास्तिकाय बाह्य-अभ्यन्तर चौबीस परिग्रह के परित्याग-स्वरूप होने से निर्ग्रन्थ है।''

यहाँ जीव को शुद्धजीवास्तिकाय कहा है। असंख्यप्रदेशात्मक शुद्धजीव, कारण-परमात्मा, ध्रुवस्वभाव - सब एक ही हैं। जिस क्षेत्र में से अथवा जिसकी एकाग्रता से सम्यग्दर्शन पर्याय प्रकट होती है - उस असंख्यप्रदेशी जीव में परिग्रह नहीं है। बाह्य-अभ्यन्तर चौबीस परिग्रह पहले अस्तित्व में थे और बाद में उन्हें त्यागा - यहाँ ऐसा अर्थ नहीं है। परिग्रह का त्याग करना तो पर्याय में होता है। यहाँ पर्याय को गौण करके शुद्धजीव की बात चल रही है। धन, धान्य, दासी, दास, वस्त्रादि दश प्रकार के बाह्य परिग्रह शुद्ध आत्मा में नहीं हैं। ये पदार्थ राग-द्वेषवाली पर्याय में निमित्तरूप से होते हैं; किन्तु यहाँ तो शुद्धस्वभाव की बात चल

रही है। शुद्धस्वभाव में बाह्य परिग्रह के निमित्तपने का अभाव है।

पुनश्च-मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ तथा हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा और त्रिवेद मिलाकर चौदह अभ्यन्तर परिग्रह संसारदशा में एकसमय की पर्याय में हैं - ये शुद्धस्वभाव में नहीं हैं। ऐसे परिग्रहरहित होने से शुद्धजीव निर्ग्रन्थ है। यहाँ निर्ग्रन्थ शब्द का अर्थ मुनिदशा नहीं है; किन्तु शुद्धजीव त्रिकाल निर्ग्रन्थ स्वरूप है - यह निर्ग्रन्थ शब्द का अर्थ है। इसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रकट होकर पर्याय में निर्ग्रन्थता प्राप्त होती है और शरीर में भी निर्ग्रन्थता - नग्नदशा हो जाती है।

(२) आत्मा में सकल-मोह-राग-द्वेष का अभाव है, इसलिये आत्मा निराग है।

''सकल मोह-राग-द्वेषात्मक चेतनकर्म के अभाव के कारण आत्मा निराग है।''

आत्मा की संसारदशा में मोह-राग-द्वेष के परिणाम पर्याय में होते हैं, उन्हें चेतनकर्म कहा है; क्योंकि आत्मा वैसे परिणाम स्वयं करता है, कोई परपदार्थ या निमित्त नहीं कराता। जब जीव राग-द्वेष करता है, तब कर्म, शरीरादि को निमित्त कहा जाता है; परन्तु त्रिकालस्वभाव में वैसा सम्बन्ध नहीं है। यहाँ तो शुद्धस्वभाव में मिथ्यात्व, राग-द्वेष नहीं हैं; इसलिये आत्मा निराग है। ऐसे आत्मा की श्रद्धा करना धर्म का कारण है।

(३) शुद्ध आत्मा तीन शल्यों से रहित है, इसलिये निःशल्य है।

''निदान, माया और मिथ्यात्व - इन तीन शल्यों के अभाव के कारण आत्मा निःशल्य है।''

कुछ पुण्यभाव करके देवगति अथवा कोई विशेष पदवी माँगना निदानशल्य है। अपने स्वरूप में आड़ मारना, दंभ करना मायाशल्य है। आत्मा के स्वरूप से विपरीत मान्यता मिथ्यात्व शल्य है। ये शल्यें आत्मा की एकसमय की पर्याय में होती हैं; परन्तु शुद्ध स्वभाव में नहीं हैं - इसलिये आत्मा निःशल्य है। ऐसे आत्मा को भजना, ध्यान करना ही धर्म है।

(४) शुद्धात्मा में द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म का अभाव है; अतः वह सर्वदोषविमुक्त है।

'शुद्धनिश्चयनय से शुद्धजीवास्तिकाय में द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म का अभाव होने के कारण वह सर्वदोषविमुक्त है।''

ज्ञानावरणी आदि द्रव्यकर्म जड़ हैं; शरीर, मन, वाणी आदि नोकर्म हैं; राग-द्वेष के परिणाम भावकर्म हैं। संसारदशा की पर्याय में भावकर्म का द्रव्यकर्म और नोकर्म के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। व्यवहारनय एकसमय की पर्याय का ज्ञान कराता है, यह जानने के लिये है; किन्तु आदरणीय नहीं है। सच्चीदृष्टि अर्थात् त्रिकालदृष्टि से देखा जावे तो शुद्ध आत्मा में द्रव्यकर्म, नोकर्म, भावकर्म का अभाव है; अतः आत्मा सर्वदोषविमुक्त है। पर्याय में दोष है और स्वभाव में नहीं है - इसप्रकार अस्ति-नास्ति का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। ऐसे स्वभाव का आश्रय लेने पर पर्याय का दोष भी टल जाता है।

(५) मैं शुद्धकारणपरमात्मा हूँ, ऐसी वांछा भी शुद्धस्वभाव में नहीं; अतः आत्मा निष्काम है।

''शुद्धनिश्चयनय से निजपरमतत्त्व की भी वांछा नहीं होने से आत्मा निष्काम है।''

परपदार्थ, निमित्त, देव-शास्त्र-गुरु, व्यवहाररत्नत्रय आदि की इच्छा भी राग है - ये पर्याय में हैं; किन्तु शुद्धस्वभाव में नहीं। त्रिकालस्वभाव के आश्रय से निर्मल रत्नत्रय प्रकट होने की वाँछा भी स्वभाव में नहीं है; परन्तु यहाँ तो उससे भी आगे कहते हैं कि मैं शुद्धकारण परमात्मा हूँ, मेरे आश्रय से धर्मदशा प्रकट होती है - ऐसी परमतत्त्व की वांछा भी राग है, यह वांछा पर्याय में होती है। यदि शुद्धदृष्टि से देखा जावे तो परमतत्त्व की वांछा परमतत्त्व में नहीं है। यदि स्वरूप में ऐसी इच्छा हो तो स्वरूप उस इच्छा से रहित नहीं हो सकता।

निजतत्त्व को ग्रहण करने का विकल्प भी राग है। परवस्तु, देव-गुरु या अपने तत्त्व को अंगीकार करने का विकल्प भी राग है और इससे आत्मा प्राप्त नहीं हो सकता। अहो ! कितनी सरस बात की है। जगत के जीवों को प्रशस्त-राग गले पड़ गया है; किन्तु यहाँ तो अत्यन्त सूक्ष्म चर्चा करते हैं। परवस्तु को त्यागने की तो बात ही नहीं; किन्तु स्वयं शुद्ध आत्मा है - ऐसा विकल्प भी शुद्ध आत्मा में नहीं है। परवस्तु का ग्रहण-त्याग तो आत्मा में है ही नहीं तथा शुद्धस्वभाव में राग का ग्रहण-त्याग भी नहीं है। शुद्धस्वभाव वांछारहित है। जो जीव ऐसा मानता है कि मैं राग को ग्रहण

करता हूँ अथवा छोड़ता हूँ, उसकी दृष्टि पर्याय के ऊपर है। क्या शुभराग को छोड़ना है ? वर्तमान के शुभराग को कैसे छोड़ा जावे ? और भविष्य का राग तो पर्याय में भी नहीं है और द्रव्य में भी नहीं है, उसे कैसे छोड़े ? इसप्रकार राग को ग्रहण करूँ या छोडूँ - ऐसा कारणपरमात्मा में नहीं है। कारणपरमात्मा के अस्तिस्वभाव का अवलम्बन लेने पर विकल्प, राग अथवा वांछा का अभाव हो जाता है, इसलिये आत्मा निष्काम है।

(६) समस्त रागपरिणति का शुद्धस्वभाव में अभाव है, अतः आत्मा निःक्रोध है।

''निश्चयनय से प्रशस्त-अप्रशस्त समस्त परद्रव्य-परिणति का अभाव होने से आत्मा निःक्रोध है।''

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति राग प्रशस्त और संसार का राग अप्रशस्त है। ऐसे विकार की परिणति छोड़नेरूप अरुचिभाव द्वेष है। ऐसा द्वेष एकसमय की पर्याय में है; परन्तु द्रव्यदृष्टि से देखने पर ऐसा द्वेष शुद्धस्वभाव में नहीं है। शुद्धस्वभाव में समस्त परद्रव्य-परिणति का अभाव वर्तता है। परवस्तु के त्याग की तो बात ही नहीं; किन्तु राग को छोडूँ - ऐसा विकल्प भी वस्तु में नहीं है। वस्तुस्वभाव का लक्ष्य होने पर विकार उत्पन्न ही नहीं होता, तब राग छोड़ा - ऐसा कहने में आता है। परमशुद्धतत्त्व को ग्रहण करूँ - ऐसा विकल्प राग स्वभाव में नहीं है, यह बात निष्काम के प्रकरण में आई थी। और राग की वृत्ति को छोडूँ - ऐसा विकल्प द्वेष स्वभाव में नहीं है, यह बात निःक्रोध में आई है।

शुद्धस्वभाव निश्चयनय का विषय है और उसके आश्रय से विकार का अभाव होकर जो एकाग्रता प्रकट होती है, वह व्यवहारनय का विषय है।

अज्ञानी जीव चित्त-निरोध बाह्य से करना चाहते हैं; किन्तु बाह्यवस्तु या शरीर की क्रिया से चित्त का निरोध नहीं होता है। मन तो जड़ है और उसके लक्ष्य से होने वाला राग विकार है - इन दोनों का आत्मा में अभाव है। आत्मस्वभाव राग-द्वेषरहित है, इसप्रकार उसकी अस्ति के बल से राग का अभाव होने पर चित्त का निरोध हो जाता है। अपना शुद्धात्मा निश्चयनय का विषय है और उसके आश्रय से प्रकट होने वाली एकाग्रता की पर्याय व्यवहारनय का विषय है। अज्ञानी जैसा व्यवहार मानता है वैसा व्यवहार नहीं है। पर्याय में राग-द्वेष का अभाव होकर

एकाग्रता की दशा प्रकट होती है उसका ज्ञान करना व्यवहारनय का विषय है।

(७) शुद्ध आत्मा में अपूर्णता नहीं है, इसलिये वह पर का अभिमान नहीं करता, अतः आत्मा निर्मान है।

''निश्चयनय से सदा परम-समरसीभावस्वरूप होने के कारण आत्मा निर्मान है।''

आत्मा त्रिकाल उपशांत वीतरागीस्वरूप है। ऐसे समरसीभाववाला किसका अभिमान करे? निमित्त का, शुभराग का अथवा क्षायोपशमिकपर्याय का अभिमान तो है ही नहीं; किन्तु मैं आत्मा समरसीभावस्वरूप हूँ - ऐसा भी मान शुद्ध आत्मा में नहीं है, इसलिये आत्मा निर्मान है। जिसप्रकार विवाह के अवसर पर वर (दूल्हा) को गद्दी के ऊपर बिठलाते हैं और उसके माननीय पिता आदि नीचे बैठते हैं; उसीप्रकार यहाँ चैतन्य भगवान ऊँचे आसन पर विराजमान हैं, वीतराग भगवान वगैरह परपदार्थों से जुदा है, अपनी पर्याय से भी ऊँचा है। भगवान आत्मा किस बात में अधूरा है। कहा है न :-

प्रभूजी तू सब बातें पूरा -
पर की आस कहा करे प्रीतम, तू काय बातें अधूरा।

(८) शुद्ध आत्मा अन्तर्मुख होने के कारण निर्मद है, शुद्ध आत्मा एक ही उपादेय है।

''निश्चयनय से निःशेषपने अन्तर्मुख होने के कारण आत्मा निर्मद है। उक्त प्रकार का (ऊपर कहे हुए प्रकार का) विशुद्ध सहजसिद्ध नित्य निरावरण निजकारणसमयसार का स्वरूप उपादेय है।

शुद्ध आत्मा सदा अन्तर्मुखी ही रहता है, कभी बाहर आता ही नहीं। शुद्ध आत्मा का भान होने पर अन्तरात्मा अन्दर बढ़ता है उसकी बात नहीं है; किन्तु त्रिकाली ध्रुवस्वभाव सदा अन्तर्मुखी ही है; अतः निर्मद है।

इसप्रकार उक्त कथनानुसार विशुद्ध, सहजसिद्ध, नित्य, किसी भी आवरण से रहित अपना कारणशुद्धात्मा अकेला ही अंगीकार करने योग्य है। पुण्य-पाप आदरणीय नहीं - शुद्धस्वरूप एक ही उपादेय है। इसप्रकार अपने शुद्धपरमात्मा का आश्रय करे तो धर्मरूपी कार्य प्रकट हो। इसलिये वह एक ही उपादेय है।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : धारणाज्ञान में यथार्थ जाने तो सम्यक्सन्मुखता कही जाय या नहीं ?

उत्तर : धारणाज्ञान में दृढसंस्कार अपूर्व रीति से डाले, पहले कभी नहीं डाले हों - ऐसे अपूर्व रीति से संस्कार डाले जावें तो सम्यक्सन्मुखता कही जाय।

प्रश्न : अन्तर में उतरने के लिए रुचि की आवश्यकता है या कोई अन्य भूल है जिसके कारण अन्तर में नहीं उतर पाता ?

उत्तर : अन्तर में उतरने के लिए सच्ची रुचि की आवश्यकता है; किन्तु इस रुचि के सम्बन्ध में अन्य कोई क्या कह सकता है, स्वयं से ही निर्णय होना चाहिए। सच्ची रुचि हो तो आगे बढता जाय और अपना कार्य कर ले।

प्रश्न : क्या नवतत्त्व का विचार पाँच इन्द्रियों का विषय है ? नवतत्त्व के विचारक को किसका अवलम्बन है ?

उत्तर : नवतत्त्व का विचार पाँच इन्द्रियों का विषय नहीं है, पाँच इन्द्रियों के अवलम्बन से नवतत्त्व का निर्णय नहीं होता अर्थात् नवतत्त्व का विचार करने वाला जीव पंचेन्द्रिय के विषयों से तो हट गया है। अभी मन का अवलम्बन है; परन्तु वह जीव मन के अवलम्बन में अटकना नहीं चाहता, वह तो मन का अवलम्बन भी छोड़कर अभेद आत्मा का अनुभव करना चाहता है। स्वलक्ष्य से राग का नकार और स्वभाव का आदर करने वाला भाव निमित्त और राग की अपेक्षा से रहित भाव है, उसमें जो भेद के अवलम्बन की रुचि छोड़कर अभेद स्वभाव के अनुभव करने की रुचि का जोर वर्त रहा है, वह निश्चय सम्यग्दर्शन का कारण है।

प्रश्न : नवतत्त्व का विचार तो पहले अनन्तबार कर चुके हैं, फिर भी लाभ क्यों नहीं हुआ ?

उत्तर : भाई ! पहले जो नवतत्त्व का विचार कर चुके हो, उससे इसमें कुछ विशेषता है। पहले जो नवतत्त्व का विचार कर चुके हो, वह तो अभेदस्वरूप के लक्ष्य बिना किया था, जबकि यहाँ अभेद-स्वरूप के लक्ष्य सहित की बात है। पहले अकेले मन के स्थूल विषय से नवतत्त्व के विचाररूप आँगन तक तो अनन्तबार आया है; परन्तु उससे आगे बढकर विकल्प तोड़कर ध्रुव चैतन्यतत्त्व में एकपने की श्रद्धा करने की अपूर्व समझ से वंचित रहा, इसलिये भवभ्रमण खड़ा रहा।

प्रश्न : शुभभाव में गर्भित शुद्धता कही गई है, उसी प्रकार मिथ्याश्रद्धान में गर्भित शुद्धता है क्या ?

उत्तर : नहीं, मिथ्याश्रद्धानयुक्त पर्याय विपरीत ही है, उसमें गर्भित शुद्धता नहीं है। ज्ञान में निर्मलता विशेष है, ज्ञान के अंश को निर्मल कहा है और वह वृद्धिंगत होकर केवलज्ञान होता है तथा शुभ में गर्भित शुद्धता का अंश कहा है; किन्तु ग्रन्थिभेद (सम्यग्दर्शन) होने के बाद ही वह शुद्धता काम करती है।

प्रश्न : ''घटघट अन्तर जिन बसै, घटघट अन्तर जैन''- इसका क्या अर्थ है?

उत्तर : प्रत्येक आत्मा शक्तिरूप से तो 'जिन' ही है। घटघट अन्तर जैन - अर्थात् गृहस्थाश्रम में रहते हुए चक्रवर्ती के 96000 रानियाँ होती हैं, इन्द्र के करोड़ों अप्सरायें होती हैं, अनेक प्रकार के वैभव बाह्य में होते हैं; तथापि सम्यग्दृष्टि अन्दर में जैन है, राग से भिन्न पड़ा होने से सच्चा जैन है और जिसने बाहर से हजारों स्त्रियाँ छोड़ दी हो, त्यागी बन गया हो; किन्तु राग से भिन्न न हुआ हो तो वह वास्तविक जैन नहीं है। उसने राग को मन्द तो किया है; किन्तु राग से भिन्नत्व का अनुभव नहीं किया, इसलिए जैन नहीं है।

प्रश्न : राग से छुटकारा कैसे मिले ?

उत्तर : एकान्त दु:ख के जोर से राग से छुटकारा मिल जाय - ऐसा नहीं बनता। हाँ, द्रव्यदृष्टि के जोर से राग से छुटकारा मिल सकता है। आत्मा को जाने पहिचाने बिना कहाँ जावे ? आत्मा को जाना हो, उसका अस्तित्व ग्रहण किया हो, तो राग से छूटकर आत्मा में लीन हो सकता है।

प्रश्न : आत्मा की रुचिवाला जीव मरकर देव में ही जाता है न ?

उत्तर : हाँ, तत्त्व की रुचि है, वाचन-श्रमण है, भक्ति, पूजा आदि है - इनका करने वाला तो देव ही होता है। कोई साधारण हो तो वह मनुष्य होता है।

प्रश्न : देव होता है तो कैसा देव होता है ?

उत्तर : वह तो अपनी योग्यतानुसार भवनत्रिक या वैमानिक में जाय तथा आत्मानुभवी तो वैमानिक में ही जाय।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

समाचार दर्शन -

15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक आयोजित पन्द्रहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री प्रकाशचन्द गंभीरमलजी जैन अहमदाबाद के करकमलों से हुआ। उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर ने एवं प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री ताराचन्दजी सोगानी जयपुर ने किया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के बंध अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के षटकारक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र-भक्ति के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार गाथा 14-15 पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए। तत्पश्चात् रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के पूर्व पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई, डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित शिखरचंदजी विदिशा के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें - समयसार (कर्ताकर्माधिकार) पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, **गुणस्थान विवेचन** पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, **नयचक्र (नैगमादि सप्तनय)व चार अभाव/पंच भाव** पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 49)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा, **तत्त्वार्थसूत्र** पर डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रात: 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के प्रवचनसार पर व्याख्यान के तत्काल बाद 7.00 बजे तक जी-जागरण चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के निश्चय-व्यवहार पर सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' आगरा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित वीरेन्द्रजी, पण्डित रमेशजी जैन लवाण, पण्डित

सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षा विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलाई गई।

विशिष्ट कार्यक्रम - टोडरमल स्नातक परिषद् एवं अखिल भारतवर्षीय विद्वत्परिषद् द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर गोष्ठी दिनाँक 21से 23 अक्टूबर तक रखी गई। दिनाँक 24 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन किया गया।

श्री टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों की मीटिंग दिनांक 26 व 27 अक्टूबर को रखी गई, जिसमें छात्रों के अभिभावकों ने महाविद्यालय के अध्यापकों के साथ मिलकर अपने बालकों की प्रगति की जानकारी ली।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्रीमती अमृतबेन ध.प. स्व. श्री बेलजीलाल शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

इस शिविर में विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। विधान में मुख्य मंगल कलश के विराजमानकर्ता श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी परिवार थे।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में 36 विद्वानों के माध्यम से लगभग 700 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग 26 हजार 500 घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा 15 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

महाविद्यालय का सुयश

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी समय-समय पर मेरिट लिस्ट में अपना स्थान बनाते आये हैं। इसी क्रम में वर्ष 2011-12 के परीक्षा परिणाम में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की मेरिट लिस्ट में **कु. श्रुति जैन पुत्री पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली ने प्रथम स्थान** एवं **कु. प्रतीति पाटील पुत्री पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने तृतीय स्थान** प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. भारिल्ल की जन्मभूमि –

बरौदास्वामी का होगा कायाकल्प

15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर को ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' ने अपने अभिनन्दन के अवसर पर बोलते हुए डॉ. भारिल्ल को न केवल जैन समाज अपितु मानवमात्र के उन्नयन हेतु एक इतिहास पुरुष की संज्ञा देते हुए कहा कि डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी हमारे लोकसभा क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। ''मैं चाहता हूँ कि इस गांव का कायाकल्प होना चाहिये, जिस माटी में ऐसे विद्वत्पुरुष ने जन्म लिया है, वहां उनके नाम से कुछ ऐसा होना चाहिये जिससे आने वाले समय में लोग प्रेरणा लेवें। मैं यहाँ उपस्थित जैन समाज के श्रेष्ठीजनों से आग्रह करता हूँ कि वे इस दिशा में आगे बढे। मैं भी मंत्रालय के स्तर पर अधिक से अधिक सहयोग करूँगा।

इस उत्साहपूर्ण वक्तव्य को सुनकर ढाईद्वीप जिनायतन के कल्पनाकार श्री मुकेशजी जैन इन्दौर ने सभा को बताया कि हमारी भी यही भावना थी; अत: हमारे ट्रस्ट (कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर) ने तो 3 वर्ष पहले ही डॉ. भारिल्ल का बरौदास्वामी वाला घर वहाँ के लोगों से खरीद लिया था और हम उसमें डॉ. भारिल्ल के नाम से एक भवन बनाकर जन कल्याण की गतिविधियाँ प्रारम्भ करना चाहते हैं। मंत्रीजी ने आज जो आदेश दिया है, हम उसे आप सभी के सहयोग से प्रारम्भ करने को तैयार हैं। श्री मुकेशजी ने करतल ध्वनि के बीच घोषणा की कि बरौदास्वामी में बनने जा रहे अहिंसा शोध संस्थान भवन का शिलान्यास आगामी 18 जनवरी 2013 को मंत्रीजी की उपस्थिति में होगा।

बरौदास्वामी में होने वाले कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी आगामी अंकों में प्रकाशित की जायेगी। ●

हार्दिक बधाई !

1. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर द्वारा पुत्री जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 250/- रुपये प्राप्त हुये।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित बाबू शास्त्री नल्लूर तमिलनाडु ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित बी.एड. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपको दि. 14 अक्टूबर को सम्पन्न दीक्षान्त समारोह में न्यायमूर्ति मल्लीमत और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाशजी के सानिध्य में 'श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता' स्वर्ण पदक से भी पुरस्कृत किया गया।

इस उपलब्धि पर टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर को प्रात: श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार) को 'समाजरत्न' की उपाधि देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जस्टिस नगेन्द्रकुमारजी जैन (अध्यक्ष-अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एन.के. सेठी जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर (केन्द्रीय उपाध्यक्ष-दि.जैन महासमिति), श्री पानाचन्दजी जैन जयपुर (पूर्व न्यायाधीश), श्री ज्ञानचन्दजी झांझरी (अध्यक्ष-पदमपुराक्षेत्र), श्री विवेकजी काला जयपुर (पूर्व अध्यक्ष-महासमिति), श्री अनिलजी जैन (डी.एस.पी. जयपुर), श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई एवं कुंवर नगेन्द्र सिंह राठौर दिल्ली मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम में श्री प्रदीपजी जैन का परिचय श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने दिया। तत्पश्चात् उनका तिलक लगाकर, माल्यार्पणकर, शॉल ओढाकर, श्रीफल व प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मान किया गया। प्रशस्ति-पत्र का वांचन पण्डित संजीवजी गोधा ने किया।

इस अवसर पर जस्टिस नगेन्द्रजी जैन, श्री एन.के. सेठी, जस्टिस पानाचन्दजी जैन, कुंवर नगेन्द्र सिंह राठौर एवं श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर के उद्बोधन का लाभ मिला।

श्री प्रदीपजी जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि डॉ. भारिल्लजी के विद्यार्थी अपने जीवनभर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करते हैं। इन्हीं विद्यार्थियों के कारण समाज उन्नति कर रहा है। इनका प्रत्येक विद्यार्थी एक चलती फिरती संस्था है जो समाज ही नहीं पूरे देश में सत्य, अहिंसा और संयम का उपदेश दे रहे हैं। डॉ. भारिल्ल को मैं नमन करता हूँ, वे एक ऐसी विभूति हैं जिनने आज 650 विद्यार्थियों को गढा है या ऐसा कहें कि उनने इतनी चलती फिरती संस्थायें बना दी है और बनाते जा रहे हैं। उनका समाज पर बहुत उपकार है। डॉ. भारिल्ल ने जो साहित्य लिखा है, वह बेजोड़ है। मैं चाहता हूँ कि डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी जो कि हमारे ही चुनावक्षेत्र में है, में एक विश्वस्तरीय अहिंसा शोध संस्थान बनना चाहिये। आप सभी इस दिशा में सोचें, मैं मन्त्रालय स्तर पर जो भी संभव होगा अधिकतम सहयोग करने का प्रयत्न करूँगा।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री प्रदीपजी जैन ने समाज की उन्नति एवं तत्त्वप्रचार में बहुत सहयोग दिया है; अत: आज इन्हें 'समाज रत्न' की उपाधि देकर सम्मानित किया जा रहा है।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने एवं मंगलाचरण कु. परिणति पाटील ने किया। ●

क्रमबद्धपर्याय विषयक विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21-23 अक्टूबर तक अखिल भारतवर्षीय विद्वत्परिषद एवं श्री टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था - **क्रमबद्धपर्याय**। इसमें 14 विद्वानों ने क्रमबद्धपर्याय विषय के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

दिनांक 21 अक्टूबर को प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कान्तिलालजी बड़जात्या रतलाम मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत पण्डित मनीषजी कहान शास्त्री जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप'** विषय पर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने **'क्रमबद्धपर्याय की स्वीकार्यता में मुख्य बाधा : दुराग्रह'** विषय पर एवं डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर ने **'कार्य का कर्ता कौन : पाँच समवाय'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने एवं मंगलाचरण पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ ने किया।

दिनांक 22 अक्टूबर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. पी.सी. जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयकुमार शान्तिनाथ शेटे मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. पी.सी. जैन जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय : स्वच्छन्दता या स्वाधीनता'** विषय पर, डॉ. नीतेशजी शास्त्री जयपुर ने **'पर्यायें क्रमनियमित या क्रमबद्ध'** विषय पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने **'क्रमबद्धपर्याय और आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी'** विषय पर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर ने **'सदी का बहुचर्चित विषय क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर एवं डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई ने **अकालनय : क्रमबद्धपर्याय** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं मंगलाचरण पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 23 अक्टूबर को तृतीय सत्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सानिध्य में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह जयपुर मंचासीन थे। गोष्ठी के अन्तर्गत पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने **'सहजकर्तृत्व, अकर्तृत्व, स्वकर्तृत्व'** विषय पर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने **'पुरुषार्थ और क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली ने **'सर्वज्ञता और क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय की करणानुयोग द्वारा सिद्धि'** विषय पर एवं डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने **'क्रमबद्धपर्याय की प्रथमानुयोग द्वारा सिद्धि'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पं. राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं मंगलाचरण पण्डित अजितजी शास्त्री ने किया।

इसप्रकार यह त्रिदिवसीय संगोष्ठी क्रमबद्धपर्याय विषय पर सांगोपांग विवेचन के साथ अत्यंत सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी की सभी शिविरार्थियों ने प्रशंसा की एवं शिविरों में इसप्रकार गोष्ठियों के आयोजन के अभिनव प्रयोग की सराहना की। ●

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का -

33वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 24 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 33वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के. मोटाणी मुम्बई ने की। अधिवेशन का उद्घाटन श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचन्दजी कटारिया (पूर्व गृहमंत्री, राज.सरकार) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन, श्री अशोकजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, श्री प्रेमचन्दजी गुरहा रायपुर, श्री महाचन्दजी सेठी भीलवाड़ा, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि विद्वत् समुदाय के अतिरिक्त राष्ट्रीय महामंत्री पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, राज.प्रदेश उपाध्यक्ष महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, राज.प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा एवं जयपुर महानगर शाखा के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी, भीलवाड़ा शाखा अध्यक्ष श्री सुकुमारजी जैन एवं श्री प्रमोदजी मोदी मकरौनिया इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री सुकुमारजी जैन ने भीलवाड़ा शाखा की, श्री संतोषजी शास्त्री ने बकस्वाहा शाखा की एवं श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने राजस्थान प्रदेश की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके पूर्व श्री संजयजी सेठी जयपुर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान द्वारा प्रकाशित दीपावली पर पटाखे न फोड़ने सम्बन्धी पोस्टर का विमोचन डॉ. भारिल्ल द्वारा किया गया।

मंच संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने एवं मंगलाचरण श्री संजीवजी जैन शाखा उस्मानपुर दिल्ली ने किया। ●

अनेक ग्रन्थों का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर वृहद् द्रव्यसंग्रह, अष्टपाहुड, क्रमबद्धपर्याय, छहढाला का सार, समाधितंत्र प्रवचन, विश्व में जैनधर्म, चौदह गुणस्थान आदि अनेक ग्रन्थों का विमोचन हुआ

सभी साहित्यप्रेमियों से निवेदन है कि साहित्य बिक्री विभाग को ऑर्डर देकर साहित्य मंगा सकते हैं।

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय का –

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का वर्ष 2011 का परीक्षा परिणाम दिनांक 27 अक्टूबर को शिक्षण शिविर में घोषित किया गया, जो निम्नानुसार है-

उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं) में प्रथम स्थान विकास जैन बड़ामलहरा एवं द्वितीय स्थान शुभम जैन दिल्ली (बिनौली) ने प्राप्त किया। **उपाध्याय वरिष्ठ** (12वीं) में प्रथम स्थान सौरभ जैन कोलारस एवं द्वितीय स्थान नरेश जैन भगवां ने प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान विवेक जैन अमरमऊ एवं द्वितीय स्थान कुलभूषण अम्बेकर जालना ने प्राप्त किया। **शास्त्री द्वितीय वर्ष** में प्रथम स्थान अभिषेक जैन इन्दौर एवं द्वितीय स्थान कु. अनुभूति जैन गुना ने प्राप्त किया। **शास्त्री तृतीय वर्ष** में प्रथम स्थान कु. प्रतीति पाटील जयपुर एवं द्वितीय स्थान आशीष जैन दूनी ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान कु. अनुभूति जैन दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ), **शास्त्री वर्ग** में प्रथम स्थान कु. श्रुति जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्राप्त किया।

प्रवीणता सूची में स्थान पाने वाले सभी छात्रों को प्रमाणपत्र एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया। ●

कहानी लेखन प्रतियोगिता

दादी-नानी से सुनी हुई या दादी-नानी को सुनाने के लिए कहानियाँ सबको उपलब्ध हों इस उद्देश्य से एक कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसके नियम निम्नानुसार है -

1. कहानी पौराणिक या काल्पनिक हो परन्तु वह जैनदर्शन के सिद्धांतों/नैतिकता की शिक्षा देने वाली हो। 2. कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित अधिकतम 300 शब्दों की हो। 3. प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त कहानियों को क्रमश: 1000, 700 व 500 रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा। साथ ही पुस्तक में प्रकाशन योग्य प्रत्येक कहानी को 200/- रुपये प्रदान किये जायेंगे। 4. कहानी भेजने की अन्तिम दिनांक 31 दिसम्बर 2012 है।

कहानी भेजने का पता – समर्पण, ध्रुवधाम, पो. कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा (राज.) मो. 08003639039 / अमित जैन कोलकता 09831665857

चलो सम्मेदशिखर ! **चलो सम्मेदशिखर !!**

दिनांक 24 से 29 नवम्बर 2012

तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी साधर्मियों को हार्दिक आमंत्रण है।

नवीन प्रकाशन

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा आत्मानुभूति कैसे ? (मूल्य 10 रुपये) एवं नयचक्र गाइड (मूल्य 7 रुपये) उपलब्ध है।

'नयचक्र गाइड' में अध्यात्म की दृष्टि से उपयोगी अध्यात्म के नयों की समस्त जानकारी सरल शब्दों में संक्षेप में प्रस्तुत की गई है। नयों के भेद-प्रभेदों का अन्तर चार्ट के माध्यम से बताया गया है, जिससे नयों का अंतर प्रतिदिन पाठ कर आसानी से याद रखा जा सकता है।

'आत्मानुभूति कैसे ?' पुस्तक में हमें आत्मानुभूति के लिये क्या करना चाहिये ? विषय को सरल शब्दों, रोचक शैली व संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। आत्मानुभूति के मार्ग में आने वाली अटकन, भटकन और उलझन को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

प्राप्ति स्थान-पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4,बापूनगर,जयपुर (राज.)

समयसार ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण

आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा विरचित समयसार परमागम की सुरक्षा व बहुमान की भावना से ताम्रपत्र पर मूल 415 गाथायें उत्कीर्ण कर उसे स्थायी रूप प्रदान करने का कार्य श्री मनोजकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर द्वारा किया गया है, जिसका विमोचन दिनांक 22 अक्टूबर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया गया। ताम्रपत्र पर समयसार उत्कीर्ण कराने हेतु **संपर्क करें – श्री मनोज कुमार जैन** फोन नं.- 07599301008 E-mail : ptmanojjain@gmail.com

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक –

डॉ.वीरसागरजी द्वारा राष्ट्रपति भवन में व्याख्यान

नई दिल्ली : यहाँ राष्ट्रपति भवन में क्षमावणी पर व्याख्यान देने हेतु टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली को आमंत्रित किया गया।

इसके अतिरिक्त माननीय राहुलजी गांधी ने जैनदर्शन की विशेष जानकारी हेतु डॉ. वीरसागरजी को विशेष आमंत्रण देकर अपने निवास पर बुलाया, जहाँ उन्होंने डॉ. वीरसागरजी से 1 घण्टे तक जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की। ●

रेल सुविधा प्रारम्भ

श्रवणबेलगोला से मैसूर के लिये रेल सुविधा प्रारम्भ हो चुकी है, जिसका किराया मात्र 25 रूपये है। यह रेल मैसूर से प्रात: 11.30 बजे निकलकर दोपहर 3.30 बजे श्रवणबेलगोला पहुँचती है तथा दोपहर 3.50 बजे श्रवणबेलगोला से चलकर रात्रि 8 बजे मैसूर पहुँचती है। सभी इस सुविधा का लाभ उठावें।

हार्दिक बधाई

1. किशनगढ (राज.) निवासी श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी के पौत्र एवं श्री अरिहंत-दिव्या चौधरी के पुत्र क्षायिक चौधरी का जन्म दिनांक 29 अक्टूबर को जोधपुर में हुआ। आपके परिवार को हार्दिक बधाई। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद !

2. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर द्वारा पुत्री जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 250/- रुपये प्राप्त हुये।

3. श्रीमती शान्तिदेवी व श्री धन्यकुमार जैन जयपुर वाले सूरत के सुपौत्र **चि. स्नेहिल** का पाणिग्रहण संस्कार श्रीमती अनितादेवी व श्री बाबूलालजी झांझरी इचलकरणजी वालों की सुपुत्री **सौ. प्रीति** के साथ दिनांक 22 अक्टूबर 2012 को लोनावाला (महा.) में संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये एवं मंदिरजी में 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

शोक समाचार

1. जयपुर (राज.) निवासी श्री प्रेमचन्दजी संघी का दिनांक 17 जून 2012 को 92 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपका जीवन आध्यात्मिक रूप से ओतप्रोत था। आप टोडरमल स्मारक के शिविरों में तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. दूदू (राज.) निवासी श्रीमती नाथीदेवी सोगानी धर्मपत्नी स्व. श्री कल्याणमलजी सोगानी का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में पदमचन्द प्रकाशचन्दजी सोगानी द्वारा 1111/- रुपये संस्था को प्राप्त हुये।

प्रशिक्षण शिविर देवलाली में

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 19 मई से 5 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है। जयपुर शिविर के दौरान देवलाली ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री कान्तिभाई मोटानी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि ने प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु समस्त उपस्थित मुमुक्षु समाज को हार्दिक आमंत्रण दिया।

आवश्यक सूचना

वीतराग-विज्ञान के पाठकों को सूचित किया जाता है कि अक्टूबर 2012 से वीतराग-विज्ञान (कन्नड़) का प्रकाशन प्रारंभ हो चुका है; अत: जो कन्नड़भाषी पाठकगण वीतराग-विज्ञान हिन्दी भाषा के स्थान पर कन्नड़ भाषा में मंगाना चाहते हैं, वे पत्र, फोन या ई-मेल द्वारा सूचित करें - संपर्क सूत्र - टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 फोन- 0141-2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com